# एक हक़ की लड़ाई

मणिमाला

औरतों को घर परिवार के अन्दर तो बहुत कुछ झेलना ही पड़ता है, लेकिन जब वे घर से बाहर निकलती हैं तब भी कम नहीं झेलना पड़ता। अब उन्होंने चुप न रहकर अन्याय के खिलाफ़ संघर्ष करने का फैसला किया है। सहारनपुर की बहनों ने हाल ही में लाठी गाली का सामना करके ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इसी साल जून माह की बात है। एक जगह गुड्डे-गुड्डियों का खेल चल रहा था। उसी दौरान थाना मंडी के इंस्पेक्टर विनोद शर्मा की झड़प देवबंद नगर-पालिका की अध्यक्ष जीनत नाज़ से हो गई। बात बात तक नहीं रही, बहस और फिर झड़प में बदल गई। तर्क से थकने लगे तो इंस्पेक्टर ने अपने मर्दानापन के इस्तेमाल की बात सोची। नाज़ के साथ अश्लील व्यवहार किया। औरत होने की गालियां दीं।

इस घटना का विरोध होना ही चाहिए था, हुआ भी। नाज़ धरने पर बैठ गई। उनकी मांग थी कि इंस्पेक्टर को निलंबित किया जाये। यह सवाल सिर्फ़ नाज़ का तो था नहीं, हर ग़ैरतमन्द औरत का था। पालिका के कुछ सभासदों, सामाजिक संगठनों ने उनका साथ दिया। इलाके के महिला संगठनों ने ख़ास भूमिका निभाई। उनके शामिल होने से यह मसला किसी व्यक्ति का न रहकर समाज का बन गया। विरोध भी आन्दोलन बन गया।

सारे संगठनों ने मिलजुलकर आन्दोलन को आगे बढ़ाने का फ़ैसला किया। घोषणा की कि 25 जून 1997 को घंटाघर पर चक्का जाम किया जायेगा और रेलें रोकी जायेंगी। इस दौरान पुलिस ने 21 लोगों को गिरफ्तार किया, पर आन्दोलन थमा नहीं, बढ़ता ही गया।

आन्दोलन के दबाव में थाना इंस्पेक्टर का तबादला कर दिया गया, पर तबादला कोई हल नहीं था। जगह बदल जाने से क्या कुछ बदल जायेगा? नाज़ के साथ बदतमीज़ी हो या किसी और के साथ, क्या फ़र्क पड़ता है... और इसी सोच के साथ आन्दोलन जारी रहा।

अपनी घोषणा के मुताबिक महिलाओं ने घंटाघर पर खड़ी होकर वहां से निकलने वाले पांच रास्ते जाम कर दिये। मानव श्रृंखला बनाई और नारेबाज़ी भी की। पुलिस वाले इससे बहुत ही नाराज़ हो गये। पहले बहला-फुसला कर हटाने की कोशिश

कर रहे थे। उससे वे नहीं हटी तो धमकियां दी गईं। धमकियां भी उन्हें हटाने में सफल नहीं रहीं तो पुलिस ने अपनी लाठी का इस्तेमाल किया। अंधाधुंध लाठियां बरसाई गईं उन औरतों पर। उनका कसूर सिर्फ़ इतना था कि वे पुलिस इंस्पेक्टर द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार का विरोध कर रही थीं।

सभार वीमेन इनवीजन जुलाई 97

लाठी-चार्ज के दौरान आन्दोलनकारियों को खूब चोट आई। कई तो घायल होकर गिर पड़ीं। फिर भी विरोध के स्वर थमे नहीं। जो नहीं गिरी वे खड़ी रहीं। प्रदर्शन करती रहीं। नारे लगाती रहीं। उन्हें वहां से हटाने के लिए पुलिस ने बाल पकड़कर उन्हें घसीटा। जबरन गाड़ी में बिठाया और पुलिस स्टेशन ले गये।

कइयों की हालत इतनी खराब हो गई थी कि उन्हें पुलिस थाने के बजाय अस्पताल ले जाना पड़ा। उन पर पुलिस को उकसाने का, बलवा करवाने का, इलाके की शांति भंग करने इत्यादि कई उल्टे सीधे आरोप लगाये गये पुलिस ने इन सबको अपनी हिरासत में ले लिया। जेल ले गये। फ़िलहाल तो वे जमानत पर छूट गयी हैं, पर उन्होंने आगे भी लड़ते रहने का फैसला किया है। पुलिस ने इन्हीं आरोपों के आधार पर उन्हें तंग करने का इरादा बना रखा है। लगता है यह लड़ाई लम्बी चलेगी।

वैसे अक्सर ऐसा होता नहीं है। अगर किसी कामकाजी महिला पर कोई आपत्ति आती है, कोई अत्याचार होता है तो हम यह सोचते हैं कि उसका व्यक्तिगत मामला है। इसी तरह अगर किसी कार्यकर्त्ता पर कोई हमला होता है तो कामकाजी महिलाएं सोचती हैं कोई बवाल किया होगा। घर के अन्दर महिलाओं पर कोई अत्याचार होता है तो हम सोचने लगते हैं कि घरेलू माहौल में एडजस्ट करना नहीं आया होगा। पर यह अपने आप में उम्मीद जगाने वाली एक घटना है जहां सारे लोगों ने मिल बैठ कर इस घटना का विश्लेषण किया। सामाजिक संदर्भ में इसे समझने की कोशिश की और औरत की गरिमा पर आंच न आने देने का फैसला किया। इस लड़ाई का एक खूबसूरत पहलू यह भी है कि इसमें अच्छी तादाद में मर्द भी शामिल हुए।

जीत हार तो लगी ही रहती है। लाठी गोली भी चलती ही रहती है। लड़ेंगे तो मार पड़ेगी। लड़ेंगे तो हारेंगे भी। तो क्या लड़ें ही नहीं? यह तो नहीं हो सकता। सो, लड़ाई ज़ारी है। □

***खूब से सवालात करने आज हम सब आए हैं,***
***सारे अंधियारों को हरने आज हम सब आए हैं।***